REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों पर कार्यसंतुष्टि का अध्ययन

मनीषा श्रीवास्तव
शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर.

सारांशः–

निरन्तर शोधकत्ताओं के द्ववारा नौकरी की संतुष्टि पर हमेशा से ही प्रश्न चिन्ह और बहस होती रही है क्योंकि यह किसी के उद्देश्यों की गठित एवं उपलिब्ध के लिये एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है अतः शोधकर्ती ने सागर जिले की सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 अध्यापकों का चयन किया गया। जिसमें 300 पुरूष अध्यापक 300 महिला अध्यापिकाऐं है। कार्य संतुष्टि का अध्ययन करने के लिये कुमार एवं गुप्ता (1996) द्वारा निर्मित कार्यसंतुष्टि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथ्यों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन व टी परीक्षण द्ववारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्रस्तावनाः–

शिक्षक समाज की आवश्यकता है और शिक्षण कार्य एक शिक्षक का वह महत्वपूर्ण कार्य है जिस पर पूरी प्रक्रिया की रीढ निर्भर करती है और देश समाज के निर्माण में अपनी सहज भूमिका निभाने है शिक्षक एक ऐसे कार्य को करते है जिसमें आस–पास सभी शैक्षणिक कार्यक्रम घूमते है यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि शिक्षकों की गुणवत्ता उसकी उपलब्धि के स्तर को प्रभावित करती है।

लार्क (1969) के अनुसार ''कार्यसंतुष्टि वह धनात्मक भावनात्मक स्थिति एवं खुशी है जो कार्य के अनुभव की तारीफ करने एवं बढ़ावा देने के फलस्वरूप प्राप्त होती है अतः हम सकते है कि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों में तनावपूर्ण स्थिति व उनकी कार्यसंतुष्टि को परिभाषित करना एवं उसकी व्याख्या करना मुश्किल है उदाहरण के लिये उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में प्राचार्य, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच नजदीकी संबंध होते है जे कि शिक्षकों के प्रबंधन द्वारा मूल्यांकन पर निर्भर होते है।

कोठारी कमीशन (1964–66) ने भी अध्यापकों को राष्ट्र निर्माता की संज्ञा दी है आशय यह कि शिक्षक सामान्य, सामाजिक व्यक्ति से अधिक चरित्रवान, उदार, सहिष्णु, दयालु व मर्यादित होता है।

आर्थर बी मोलबेनः–

एक सफल शिक्षक के लिये जीवन शक्ति का होना आवश्यक है यह केवल इसलिये ही आवश्यक नहीं है कि इसका प्रभाव बालकों में प्रति विश्वासात्मक रूप में पडेगा परन्तु थकान से उत्पन्न हुई बाधाओं को कम करने के लिये भी यह आवश्यक है।

वर्तमान समय में शिक्षक अपने कार्य के प्रति असंतुष्ट है निजी विद्यालयों में कार्य अधिक, कम वेतन, प्रशासनिक हस्ताक्षेप, के कारण शिक्षक अपने कार्य से पूर्ण संतुष्टि नहीं है तो वही सरकारी विद्यालयों में निरन्तर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की बढ़ती संख्या शासकीय अधिक कार्य भार, आपसी मतभेद, विद्यार्थियों में शेष शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि को प्रभावित करते है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

(1) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।
(2) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।
(3) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं :–

(1) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
(2) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
(3) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपकरणः–

प्रस्तुत अध्ययन में कार्यसंतुष्टि को मापने के लिए डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.एन. द्वारा निर्मित कार्यसंतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सागर जिले के सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 600 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 300 पुरूष अध्यापक एवं 300 महिला अध्यापिकाऐं सम्मिलित है।

प्रदत्तों का साारणीयनः–

सारणी 1.1
सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों (पुरूष व महिला) की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
सरकारी विद्यालयों के अध्यापक	300	25.41	9.45	2.84	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर है।
निजी विद्यालयों के अध्यापक	300	23.31	8.66			
df - 598					1.96	2.59

सारणी 1.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का क्रांतिक अनुपात 2.84 पाया गया। प्राप्त मान की सार्थकता देखने के लिए 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता मानों से तुलना करने पर यह पाया गया कि सी.आर. का मान प्राप्त मान 2.84, 0. 05 के मान 1.96 एवं 0.01 के मान 2.59 के मानों से अधिक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालय के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में अंतर है अतः सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का स्तर निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से उच्च है।

सारणी 1.2
सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0.05	0.01
सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक	150	24.25	8.66	1.08	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापक	150	23.20	8.21			
df - 298					1.97	2.59

सारणी 1.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का क्रांतिक अनुपात 1.08 पाया गया। प्राप्त मान की सार्थकता देखने के लिए 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता मानों से तुलना करने पर यह पाया गया कि सी.आर. का मान प्राप्त मान 1.08, 0. 05 के मान 1.96 एवं 0.01 के मान 2.59 के मानों से कम है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों पर कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि का स्तर समान है।

सारणी 1.3
सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता	स्तर
					0.05	0.01
सरकारी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाऐं	150	25.32	9.98	1.16	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाऐं	150	24.04	9.11			
df - 298					1.97	2.59

सारणी 1.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है। कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि का क्रांतिक अनुपात 1.16 पाया गया। प्राप्त मान की सार्थकता देखने के लिए 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता मानों से तुलना करने पर यह पाया गया कि सी.आर. का मान प्राप्त मान 1.16, 0. 05 के मान 1.56 एवं 0.01 के मान 2.59 के मानों से कम है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि का स्तर समान है।

निष्कर्ष :–

(1) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर है।
(2) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है।
(3) सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है।

LBP PUBLICATION

परिकल्पनाओं का सत्यापन :–

(1) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्र.1 अस्वीकृत की जाती है।

(2) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र.2 स्वीकृत की जाती है।

(3) सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र.3 स्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

(1) आर.लाल (2013) विद्यालय प्रबन्धन तथा शिक्षण शास्त्र पेज (83) आगरा।

(2) कपिल एच.के. (2009) साख्यिकीय के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। हाउस प्रा.लि.

(3) चौपड़ा विद्या (2012) प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि का अध्ययन Modern Education Research in India Vol No 19 (A) ISSN-0974

(4) डॉ. पुरकर शोभा (2014) उ.मा. विद्यालयों के शिक्षकों के कार्ययात्मक पूर..... का कार्यसंतुष्टि पर दबाव का अध्ययन Education Research in India Vol No 19 (A) ISSN-0974 0554. VoL 25 (2)

(5) पाठक पी.डी. (2015) शिक्षा, समाज पाठ्यचर्चा और शिक्षार्थी, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

LBP PUBLICATION